गैर-व्यक्तगित डेटा का वनियिमन

प्रीलमि्स के लयि:

नॉन पर्सनल डेटा, बौद्धकि संपदा अधकिार

मेन्स के लयि:

सरकारी नीतयिाँ और वभिन्नि क्षेत्रों में वकिास के लयि हस्तक्षेप और उनके अभकिल्पन तथा कार्यान्वयन के कारण उत्पन्न वषिय

संदर्भ:

हाल ही में इन्फोससि के सह-संस्थापक क्रसि गोपालकृष्णन की अध्यक्षता वाली एक सरकारी समतिि ने सुझाव दयिा कि भारत में उत्पन्न गैर-व्यक्तगित डेटा को वभिन्नि घरेलू कंपनयिों और संस्थाओं द्वारा उपयोग करने की अनुमतदिी जानी चाहयि। इस समतिि का गठन सतिंबर, 2019 में IT मंत्रालय एवं सरकार, उद्योग एवं शक्षिा क्षेत्र के वशिषज्ञों को शामलि कर कयिा गया था। समतिि ने एक अलग राष्ट्रीय कानून और गैर-व्यक्तगित डेटा की नगिरानी हेतु एक अलग प्राधकिरण के गठन का सुझाव भी दयिा। इसने गैर-व्यक्तगित डेटा को अनविार्य रूप से साझा करने की भी सफिारशि की। इससे भारतीय उद्यमयिों के लयि नई और अभनिव सेवाओं या उत्पादों को वकिसति करने में सहायता मलिेगी।

क्या है गैर-व्यक्तगित डेटा?

- गैर-व्यक्तगित डेटा, डेटा का ऐसा सेट होता है जसिमें ऐसी कोई व्यक्तगित जानकारी नहीं होती जसिसे कसिी व्यक्तकिी पहचान की जा सके। अर्थात् ऐसे डेटा का देखकर कसिी भी व्यक्तकिी पहचान नहीं की जा सकती।
  - उदाहरणस्वरूप अगर कसिी ऑनलाइन सेवा प्रदाता द्वारा एकत्र कयि गए ऑडर ववरिण में से कसिी व्यक्तका नाम, आयु, लगि या संपर्क संबंधी अन्य जानकारी नकिाल ली जाए तो यह गैर-व्यक्तगित डेटा बन जाता है।
- सरकारी समतिि द्वारा गैर-व्यक्तगित डेटा को मुख्यत: तीन वर्गों में वभिाजति कयिा गया है-
  - **सार्वजनकि गैर-व्यक्तगित डेटा (Public Non-Persoanl Data):** सरकार और उसकी एजेंसयिों द्वारा एकत्र कयि गए सभी डेटा जैसे कि जनगणना, एक खास अवधि में नगर नगिम द्वारा कुल कर प्राप्तयिों के संबंध में एकत्र कयिा गया डेटा या सभी सार्वजनकि रूप से वति पोषति कार्यों के नषि्पादन के दौरान एकत्र की गई कोई भी जानकारी।
    - उदाहरण: म्यूनसिपिल कॉरपोरेशन द्वारा कुल कर प्राप्तयिों से संबंधति संग्रहति डाटा, सभी सार्वजनकि वति पोषति कार्यों के क्रयिान्वयन के दौरान संग्रहति सूचना।
  - **सामुदायकि गैर-व्यक्तगित डेटा (Community Non-Personal Data):** कोई भी ऐसा डेटा जो लोगों के ऐसे समूह की पहचान बताए जनिकी समान भौगोलकि अवस्थति, धर्म, नौकरी या जनिके समान सामाजकि हति हो, सामुदायकि गैर- व्यक्तगित डेटा के अंतर्गत आते हैं।
    - उदाहरण: टेलीकॉम, वद्युितवतिरण कंपनयिों आदि द्वारा संग्रहति द्वारा
  - **नजिी गैर-व्यक्तगित डेटा (Private Non-Personal Data):** वैसे डेटा जो व्यक्तगित रूप से उत्पादति कयि जाते हैं और जनिहें प्रॉफराइटरी सॉफ्टवेयर या ज्ञान द्वारा प्राप्त कयिा जा सकता है, नजिी गैर-व्यक्तगित डेटा कहलाते हैं।
    - उदाहरण: गूगल, आयोजन आदि कंपनयिों द्वारा एकत्रति डेटा

गैर-व्यक्तगित डेटा का महत्त्व

- इन डेटा सेट द्वारा उपभोक्ताओं के पसंद और नापसंद को पहचानने और सेवाओं की लक्षति डलिीवरी सुनश्चिति करने में मदद मलिेगी। इससे देश में आर्थकि मूल्य और नवाचार संबंधी नए रास्ते खुलेंगे।

गैर-व्यक्तगित डेटा की संवदेनशीलता

- व्यक्तिगत डेटा के विपरीत, जिसमें किसी व्यक्ति का नाम, आयु, लिंग, यौन अभिविन्यास, बॉयोमेट्रिक्स और अन्य आनुवंशिक विवरण शामिल होते हैं, गैर- व्यक्तिगत डेटा के माध्यम से किसी व्यक्ति विशिष्टि की पहचान करना संभव नहीं होता है।
- हालाँकि, कुछ श्रेणियों में जैसे कि राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित डेटा या रणनीतिक हित जैसी सरकारी प्रयोगशालाओं या अनुसंधान सुविधाओं से संबंधित डेटा, यदि गलत हाथों में चल जाता है और इसका अनुचित ढंग से प्रयोग किया जाता है तो यह भारत के लिये सुरक्षा की दृष्टि से खतरनाक हो सकता है।
- इसके अलावा समिति की रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि किसी समुदाय के स्वास्थ्य से संबंधित गैर- व्यक्तिगत डेटा का मुक्त प्रवाह भी खतरनाक साबित हो सकता है।
- मसौदा रिपोर्ट के अनुसार, इस तरह के नुकसान की संभावनाएँ तब और अधिक प्रबल हो जाएंगी जब मूल व्यक्तिगत डेटा संवेदनशील प्रकृति का हो, इसलिये ऐसे संवेदनशील व्यक्तिगत डेटा से उत्पन्न होने वाले गैर- व्यक्तिगत डेटा को संवेदनशील गैर-व्यक्तिगत डेटा के रूप में परिभाषित किया जाना चाहिये और इसकी सुरक्षा पर आवश्यक ध्यान दिया जाना चाहिये।

डेटा और इसका महत्त्व

- सामान्य बोलचाल की भाषा में प्राय: मैसेज, सोशल मीडिया पोस्ट, ऑनलाइन ट्रांसफर और सर्च हिस्ट्री आदि के लिये डेटा शब्द का उपयोग किया जाता है।
- तकनीकी रूप से डेटा को किसी ऐसी जानकारी के समूह के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसे कंप्यूटर आसानी से पढ़ सके।
- गौरतलब है कि यह जानकारी दस्तावेज़, चित्र, ऑडियो क्लिप, सॉफ्टवेयर प्रोग्राम या किसी अन्य प्रारूप में हो सकती है।
- वर्तमान समय में व्यक्तिगत जानकारी का यह भंडार मुनाफे का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत बन गया है और विभिन्न कंपनियाँ अपने उपयोगकर्त्ताओं के अनुभव को सुखद बनाने के उद्देश्य से इसे संग्रहीत कर इसका प्रयोग कर रही हैं।
- सरकार एवं राजनीतिक दल भी नीति निर्माण एवं चुनावों में लाभ प्राप्त करने के लिये सूचनाओं के भंडार का उपयोग करते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में डेटा का महत्त्व और अधिक बढ़ जाता है।

समिति द्वारा प्रस्तुत सुझाव

- गैर-व्यक्तिगत डेटा को नियंत्रित करने हेतु एक अलग कानून तैयार किया जाए।
- एक नए नियामक निकाय-गैर व्यक्तिगत डेटा प्राधिकरण (NPDA) का गठन किया जाए।
- रिपोर्ट गैर-व्यक्तिगत डेटा परिवेश में नए हितधारकों की पहचान और उन्हें परिभाषित करती है, जिसमें डेटा प्रिंसिपल, डेटा कस्टोडियन, डेटा ट्रस्टी और डेटा ट्रस्ट शामिल है।
- ऐसी परिस्थितियों का भी निर्धारण किया जाना चाहिये जिसके तहत एक निजी संस्थान, जो गैर-व्यक्ति डेटा एकत्र करता है, क्षतिपूर्ति का भुगतान कर सके।

विनियमन की आवश्यकता क्यों

- पूरे विश्व में डिजिटल रूपांतरण का अर्थ है डेटा को परिसंपत्ति के रूप में मानना, जिसे सीधे व्यापार द्वारा या अप्रत्यक्ष रूप से उस डेटा पर एक सेवा के विकास द्वारा मुद्रीकृत किया जाता है।
- डेटा अर्थव्यवस्था में सबसे बड़े डेटा पूल वाली कंपनियों जैसे अमेजन या नेटफ्लिक्स आदि ने तकनीकी-आर्थिक लाभों का अत्यधिक फायदा उठाया है। इन्होंने डेटा के बड़े पूल के निर्माण हेतु 'प्रथम-प्रस्तावक लाभ' (First-Mover Advantage) का फायदा उठाया है अर्थात् छोटे स्तर के स्टार्टअप्स को अक्सर प्रतियोगिता से बाहर कर दिया जाता है या उनके प्रवेश में कई बाधाएँ उत्पन्न की जाती है।
- भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ी आबादी वाला देश होने के साथ-साथ, दूसरे सबसे बड़े स्मार्टफोन यूज़र्बेस के साथ, दुनिया के सबसे बड़े डेटा बाज़ारों में से एक है अत: डेटा संबंधी विनियमन की आवश्यकता यहाँ अधिक है।

गैर-व्यक्तिगत डेटा से संबंधित वैश्विक मानक

- मई 2019 में यूरोपीय संघ (European Union-EU) ने गैर-व्यक्तिगत डेटा के मुक्त प्रवाह के लिये एक विनियमन ढाँचा प्रस्तुत किया था, जिसमें यह सुझाव दिया गया था कि डेटा साझाकरण के मुद्दे पर संघ के अभी सदस्य देश एक-दूसरे का सहयोग करेंगे।
- हालाँकि यूरोपीय संघ (EU) के इस विनियमन में गैर-व्यक्तिगत डेटा को स्पष्ट तौर पर परिभाषित नहीं किया गया था, इस विनियमन में केवल इतना कहा गया था कि वह डेटा जो व्यक्तिगत डेटा नहीं है, वह गैर-व्यक्तिगत डेटा में शामिल है।
- इसके अलावा दुनिया के विभिन्न देश ऐसे हैं, जिनमें न तो व्यक्तिगत और न ही गैर-व्यक्तिगत डेटा के लिये कोई राष्ट्रव्यापी डेटा संरक्षण कानून बनाया गया है।

संबंधित चुनौतियां

- डेटा सेट द्वारा बड़ी तकनीकी कंपनियों का पक्ष लेने का आरोप लगता रहता है|
- सिर्फ बड़ी तकनीकी कंपनियों के पास ही इतनी बड़ी मात्रा में डेटा बनाने के लिये पूंजी और बुनियादी ढाँचा मौजूद है। अन्य कंपनियों द्वारा इन बड़ी प्रौद्योगिकी कंपनियों की क्षमता का सामना करना मुश्किल होगा।
- बौद्धिक संपदा अधिकारों के व्यापार संबंधित पहलुओं (TRIPS) के एक हस्ताक्षरकर्ता के रूप में भारत ने वर्ष 1999 में कंप्यूटर डेटाबेस के लिये कॉपीराइट सुरक्षा बढ़ा दी थी। ऐसे परिदृश्य में, गैर-व्यक्तिगत डेटा की सीमांकन संबंधी चुनौतियों को साझा नहीं किया जा सकता है एवं गैर-कॉपीराइट

के तहत गैर-व्यक्तगित डेटा को सार्वजनकि संसाधन के रूप में उपयोग कयिा जा सकता है।
- समतिकी रपिोर्ट में शकियत नविारण तंत्र के संबंध में कोई स्पष्टता नहीं है।

अंतमि मसौदे की रूपरेखा क्या हो?

- गैर-व्यक्तगित डेटा के क्रयिान्वयन संबंधति अंतमि मसौदा की रूपरेखा स्पष्ट होनी चाहयि:
  - सभी प्रतभिागयिों जैसे डेटा प्रसिपिल, डेटा कस्टोडयिन और डेटा ट्रस्टी की भूमकिाओं को अच्छी तरह परभिाषति कयिा जाना चाहयि।
  - वनियिमन का स्पष्ट होना आवश्यक है एवं बाज़ार सहभागयिों को सुनश्चितिता प्राप्त होनी चाहयि।
  - नयिामक ढाँचे में प्रतभिागयिों की भूमकिाओं और ज़म्मिेदारयिों का स्पष्ट वर्णन होना चाहयि।

आगे की राह

- कई अन्य देशों की तरह, भारत को भी गैर-व्यक्तगित डेटा को इस प्रकार परभिाषति करने की आवश्यकता है जसिसे बौद्धकि संपदा अधकिारों की रक्षा हो सके और सार्वजनकि हति तथा नवाचार को बढ़ावा मलि सके।
- भारत आर्टफिशियिल इंटेलीजेंस (Artificial Intelligence) पॉलसिी के संबंध मं प्रांस की राष्ट्रीय रणनीतसिे सीख ले सकता है जो आर्थकि प्रतभिागयिों को एक वश्विसनीय थर्ड पार्टी के रूप में अपने डेटा को साझा करने और आवश्यक पूल तैयार करने हेतु प्रोत्साहति करती है।
- फ्राँस की नीतसिार्वजनकि प्रधकिरणों को सामाजकि लाभ हेतु कुछ आँकड़ों के संबंध में खुलापन प्रदान करती है।
- भारत गैर-व्यक्तगित डेटा के मुक्त प्रवाह पर यूरोपीय संघ के वनियिमन से भी सीख ले सकता है, जो गैर-व्यक्तगित डेटा के मुक्त प्रवाह को प्रतस्पिर्द्धी अर्थव्यवस्था की शर्त के रूप में देखता है।

स्रोत: इकोनॉमकि टाइम्स, द इंडयिन एक्सप्रेस

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/non-personal-data-regulation